यह आर्यन द्वारा ग्रूप में पोस्ट की गई कहानी है । मैंने केवल इसे हिन्दी में पढ़ने लायक बनाया है ।
–संगीता

राजू मेरा दोस्त है । राजू की उम्र लगभग २६ साल है । उसकी दो बहनें हैं । सीता और गीता । सीता की उम्र लगभग १६ साल और गीता की तेरह साल है ।
ये कहानी मुझे सीता ने बताया ।

हुआ युँ कि एक बार राजू अपनी कार से गीता को लेकर बाज़ार गया । बाज़ार में उन्होंने गीता के क्लास में पढ़ने वाले लड़के को कार चलाते देखा । ये देख कर गीता कार चलाना सीखने के लिये राजू से जिद करने लगी । राजू ने बहुत समझाया कि कुछ दिन के बाद सिखा दूँगा पर वो नहीं मानी । तब राजू ने उसे कहा कि ठीक है सुबह एकदम सबेरे जब रोड पर कम लोग रहते हैं, मैं मैदान में ले जाकर सिखा दूँगा ।

दूसरे दिन राजू गीता को लेकर फ़िल्ड में गया । बहुत कोशिश करने पर भी गीता से कार का स्टेयरिंग नहीं सम्भल पाया । जब वो स्टेयरिंग ठीक सम्भाल्ती तो एस्सीलेटर छूट जाता, जब एस्सीलेटर सम्भाल्ती तो स्टेयरिंग छूट जाता । तब राजू ने गीता को गोद में बैठा कर स्टेयरिंग खुद पकड़ा और गीता को सिर्फ़ ब्रेक और

एस्सीलेटर सम्भाल्ने को कहा। वो बोली "नहीं मैं खुद ही दोनों सम्भालूँगी। जब गलती हो तो स्टेयरिंग तुम पकड़ लेना।"

इस तरह वो कार आगे बढ़ाई। कुछ दूर तो ठीक चली पर जब मुड़ने की बारी आयी तो वो एस्सीलेटर कम करने की जगह छोड़ ही दी और अचानक फिर एस्सीलेटर दब गया जिससे कार को जोरदार झटका पड़ा, और राजू ने जल्दी से गीता को पकड़ा ताकि वो स्टेयरिंग से टकरा न जाये और ब्रेक दबा दिया । गाड़ी रुक गयी। पर राजू के हाथ में काफ़ी चोट लगी, क्योंकि राजू का हाथ स्टेयरिंग से तकरा गया था। तब राजू का ध्यान गया कि वो गीता की दोनों छोटी–छोटी चूचियों को जकड़ रखा था। राजू ने झट से अपना हाथ हटाया। गीता भी झेंप गयी ।

फिर राजू ने कहा "अभी तो तुम स्टेयरिंग से तकड़ा जाती और तुम्हारे सीने में चोट लग जाती? देखो अभी तक मेरे हाथ में दर्द हो रहा है।" वो बोली "थैंक यू भैया जो तुमने मुझे चोट लगने से बचा लियाअ, पर तुमने भी कितनी जोर से पकड़ा कि मुझे भी दर्द होने लगा।" राजू ने पूछा "कहाँ?" वो बोली "सीने में।" इसपर राजू अपनी दोनों हथेलियों से गीता की दोनों चूचियों को सहलाते हुए पूछा "यहाँ?" वो बोली "धत भैया ये क्याअ करते हो, कोई देखेगा तो?" राजू ने कहा "कार में काला शीशा है किसी को नहीं दिखेगा।" यह कह कर राजू

दो, कल मुझे स्कूल में दिखाना है ।" राजू बोला "मैं अभी कुछ नहीं करूँगा, मुझे कम्प्युटर पर काम है और जब तक मेरा काम खतम होगा तुम सो जाओगी ।" गीता बोली "नहीं सोऊँगी,आज मैं भी देखूँन्गी तुम क्याअ काम करते हो और जब खतम हो जायगा तब सवाल बना देना ।" राजू बोला "मेरे कमरे में आने की जरूरत नहीं है । सुबह बता दूँगा ।"

गीता बोली "नहीं अभी बता दो ।" इस पर राजू की मम्मी ने कहा "बता दो राजू, तुम काम भी करते रहना और इसे बीच-बीच में मदद भी करना ।"
राजू बोला "ठीक है मेरे कमरे में आ जाओ ।" आउर राजू अपने कमरे में चला गया ।

रात करीब १० बजे गीता राजू के कमरे में गयी । राजू कम्प्युटर पर कुछ काम कर रहा था । गीता के आते ही उसने उसे गोद में बैठा लिया और चूचियाँ मसलने लगा । गीता बोली "क्या कर रहे हो भैया? कोई आ जायगा ।" इस पर राजू बोला "ठीक है पहले मैथ का सवाल हल कर लो ।"

राजू ने लगभग आधे घन्टे में सारे सवाल को हल कर दिया और गीता से बोला "जाओ देख कर आओ कि घर में सभी सो गये हैं या नहीं,और बाथरूम से होकर आना ।"

गीता चली गयी और तुरन्त ही आ गयी "हाँ भैया सब सो चुके हैं ।" यह सुनते ही राजू ने गीता को उठा लिया और बिस्तर पर पटक दिया और बोला "आज तो रानी तुम्हें इतना चोदूँगा कि तुम्हारी चूत का भोसड़ा बना दूँगा ।" गीता बोली "चोदना क्या होता है?" राजू बोला "जब मेरा लंड तुम्हारे चूत में घुस कर कुटाई करेगा तब पता चल जायेगा मेरी रानी ।" यह कह कर राजू ने उसके सारे कपड़े उतार दिये और उसकी छोटी–छोटी चूचियों को चूसने लगा और एक हाथ से उसकी चूत पर उँगली रगड़ने लगा ।

गीता को भी मज़ा आने लगा "और जोर से चूसो भैया, मज़ा आ रहा है ।" गीता की चूत भी गीली हो गयी और वो बोलने लगी "भैया मेरे पूरे शरीर को पीस दो भैया, मेरे चूत में लगता है चीटियाँ घुस गयी है । उँगली डाल कर निकालो चीटियों को ।" राजू ने कहा "हाँ मेरी रन्डी तुम्हारे कच्चे चूत में जब मेरा हथौड़े जैसा लंड जयेगा तब सारी चीटियाँ मर जायेगी ।"

राजू भी सारे कपड़े उतार कर नन्गा हो गया । राजू अपना लंड गीता के मुँह के पास ले जाकर बोला "डार्लिन्ग इसे चूसो ।" गीता ने कहा "नहीं भैया ये गँदा है ।" राजू बोला "साली जब चूसोगी तब इतना मज़ा आयेगा कि छोड़ोगी नहीं । चूसो इसे ।" गीता के मुँह में राजू का लंड तो नहीं घुस पाया, वो लंड के सुपाड़े को ही चूसने लगी ।

जब लंड से प्री–कम निकलने लगा तब उसक नमकीन स्वाद गीता को बड़ा अच्छा लगने लगा । वो सुपाड़े को चाटने लगी और बोली "हाँ भैया बड़ा अच्छा लग रहा है ।" राजू बोला "जब तुम्हारी चूत चोदूँगा तब तो और भी मज़ा आयेगा ।" गीता बोली "तो चोदो न भैया ।"

राजू क्रीम ले आया और गीता की चूत पर अच्छी तरह से लगाया । क्रीम को उसने अपने लंड पर भी लगाया और बोला "जब लंड घुसेगा तब थोड़ा दर्द होगा इसे बर्दास्त करना ,जब पूरा अन्दर चला जायेगा तब बहुत मज़ा आयेगा ।" गीता बोली "ठीक है ।" अब राजू ने गीता के टाँगों को फैलाया और उसके बीच में जाकर लंड को उसकी चूत के छेद पर रखा । दोनों हाथों से गीता की चूचियों को पकड़ा और मुँह को उसके मुँह पर लगा कर मुँह बन्द किया और गचाक से झटका मारा । "ऊईऽऽऽऽ ओंऽऽऽऽऽऽऽ आँऽऽऽऽऽऽ" करके गीता छटपटाने लगी । राजू ने फिर झटका मारा । लंड चूत के झिल्ली को तोड़ते हुए अन्दर चला गया । गीता की आँखों से आँसू निकलने लगे । राजू वैसे ही रुक कर गीता कि चूचियों को मसलने लगा । जब गीता के आँसू रुक गये तब राजू घच्च से एक झटका और मारा । पूरा लंड गीता की टाईट चूत में समा गया ।

गीता दर्द के मारे ऊंऽऽऽऽऽऽ ऊंऽऽऽऽऽऽ कर के रोने लगी । फिर जब उसका रोना रुका तब राजू ने उसके मुँह

से मुँह हटाया । गीता बोली "भैया निकालो मुझे नहीं चुदवाना है इतना दर्द मुझसे बर्दास्त नहीं होगा ।" राजु बोला "घबड़ाओ मत गीता अब तुम्हें बहुत मज़ा आयेगा । मेरा लंड तुम्हारी चूत में घुस चुका है ।" यह कह कर राजू गीता को चाटने–चूसने लगा और हाथ से उसकी छोटी–छोटी चूचियों को मसलने लगा ।

गीता का दर्द कम हो गया । वो चूची मसलवाने का आनन्द लेने लगी और चूत को सिकोड़ कर लंड का मज़ा लेने की कोशिश करने लगी । राजू ने यह देख कर चुदाई स्टार्ट कर दिया । "और तेज़ चोदो भैया ।" गीता को मज़ा आने लगा । राजू ने भी स्पीड तेज कर दिया । "और जोर से भैया .. आज मेरे चूत को कूट कर रख दो । फाड़ दो मेरी चूत को ।" और कमर उछालने लगी । राजू भी फ़ुल स्पीड में धक्के लगा रहा था । "ले साली अभी तो रो रही थी अब मज़ा आने लगा हरामजादी ,ले ।" "आऽऽऽह उऽऽह येऽऽऽह घचा–घच" चुदाई चलने लगी । "बोल हरामजादी भैया से चुदवाने में मज़ा आ रहा है?" "हाँ भैया, मुझे पता होता कि चुदाई इतनी मज़ेदार होती है तो मैं पहले ही तुम से चुदवाती ।" "साली मुझे पता होता कि मेरे घर इतनी मस्त माल है तब मैं तुम्हें पहले ही चोद देता ।" "आऽऽऽऽआऽऽऽआऽऽऽऽ ओऽऽऽऊऽऽऽओऽऽऽऽऊऽऽऽ हाँ भैया अब तुम रोज ही मुझे चोदना । आऽऽऽऽऽआ उउऽऽऽऽऽउ भैयाऽऽऽ लग रहाऽऽ हैऽऽऽ मैं आसमान मेंऽऽऽ उड़ऽऽऽऽऽ

रऽऽऽऽहीऽऽऽऽऽ हूँऽऽऽऽऽऽ आऽऽऽऽह ।" और गीता झड़ गयी । राजू के लंड ने भी धार छोड़ दी "लेऽऽऽऽऽऽ राऽऽऽऽनीऽऽऽऽ७ उऽऽऽऽऽइऽऽ मैंऽऽऽ गऽऽऽगऽऽयाऽऽऽऽऽऽ ।" और राजू झड़ गया । कुछ देर दोनों वैसे ही पड़े रहे । फिर राजू ने लंड निकाला । गीता की चूत से खून की धार निकलने लगी । "ये क्या है?" "तुम्हारा सील टूटा है ना वही खून है कुछ नहीं होगा ।" दोनों लिपट गये और चुम्मा–चाटी करने लगे ।

इस तरह दोनों जब भी मौका मिलता चुदाई का आनन्द लेते थे । एक दिन रात में जब दोनों चुदाई में मशगुल थे तभी राजू के कमरे का दरवाज़ा झटके से खुला और सीता अन्दर आ गयी । "ये क्या हो रहा है?" "कुछ नहीं बहना गीता को जवानी का आनन्द दे रहा हूँ ।" मैं पापा को बोलूँगी ।"
"मैं तुम्हें भी मज़ा दूँगा ।" सीता को सेक्स की समझ थी इसलिये उसे चुदाई देखना अच्छा लगने लगा । वो दरवाज़ा बन्द की और बोली "भैया मुझे भी चोदो तो नहीं बोलूँगी ।" राजू को क्या था, वो तो खुश हो गया कि घर में ही दो–दो मस्त माल मिल गयी । "ठीक है कपड़े उतारो और देखो ।" ये
कह कर राजू गीता की ठुकाई चालू कर दी । सीता भी अपनी छोटी–छोटी चूचियों को अपने हाथ से मसलने लगी और चूत पर हाथ सहलाने लगी । जब राजू और गीता झड़

गये तब राजू उठा और सीता की चूची देख कर उसका लंड फिर खड़ा होने लगा । सीता की चूची पूरी तनी हुई थी, उसके निप्प्ल एक दम खड़े थे और चूत पर रेशमी बाल । सीता की अनचुदी चूत देख कर राजू का लंड तन गया। उसने सीता की चूचियों को मसलना चालू कर दिया । सीता को मज़ा आने लगा । राजू ने उसकी चूत में भी उँगालेंऐं घुसेड़ दिया । सीता की भी सील नहीं टूटी थी । सीता जलदी ही गरमा गयी । राजू ने गीता को कहा "तुम सीता की चूत में क्रीम लगाओ ।" और राजू उसकी चूचियों को दाँत से काटने लगा । सीता को दर्द भी हो रहा था पर बड़ा मज़ा भी आ रहा था । जब गीता ने सीता की चूत में क्रीम लगा दिया तब राजू सीता पर लेट गया और उसक मुँह हाथ से बन्द किया और घचाक से लंड को पेल दिया । सीता छटपटा कर रह गयी पर आवाज़ नहीं निकाल पाई । सीता की भी सील टूट गयी । उसने फिर धक्का दिया – घच्च – और पूरा लंड चूत के अन्दर । उसने अपना हाथ सीता के मुँह से हटाया और बोला "चुदवायेगी?"

सीता बोली "नहीं छोड़ दो मुझे ।" "अब क्या छोड़ूँ? अब तो लंड ने अपना काम कर दिया अब मज़े लो ।" धीरे–धीरे उसने चुदाई आरम्भ कर दी । गीता बोली "दीदी मुझे भी काफ़ी दर्द हुआ था पर अब तो लगता है कि लंड को चूत में घुसाये ही रखूँ ।" सीता को भी मज़ा आने लगा था । अब कमर उछालने लगी । राजू जोर–जोर से धक्के लगाने

लगा । थप–थप थप–थप आवाज़ निकलने लगी । फिर "आऽऽऽऽऽऽऽह ओऽऽऽऽऽह मैं उड़ रही हूँ ।" गीता बोली "भैया का लंड इतन शानदार है कि अभी तुम आसमान में गोते लगाओगी ।"

"आऽऽऽ ओऽऽऽ उईऽऽऽऽ जऽऽजोऽऽर सऽऽसेऽऽ" ... "हच्च–हच्ह ओऽऽऽऽ" और दोनो झड़ गये और सुस्त पड़ गये ।

गीता बोली "मज़ा आया दीदी? अब तो तुम भैया की रण्डी बन गयी?" "हाँ गीता अब मैं रण्डी ही बने रहना चाहती हूँ ।" फिर दोनों अलग हुये गीता झट से राजू का लंड चूसने लगी । गीता बोली "चूस के देखो, आइस–क्रीम खाना भूल जाओगी ।" सीता ने लंड को मुँह में ले लिया "हाँ गीता बड़ा मज़ा आ रहा है।"

इस तरह राजू एक दिन बाद एक दिन दोनों बहनों को चोदने लगा ।

एक शाम को राजू और सीता कार से बाज़ार गये । बाज़ार से लौटने के वक्त दोनों कार पर्किंग से कार लेने गये तो कार में बैठते ही राजू ने उसे गोद में खींच लिया और सलवार का नाड़ा खोल कर नीचे सरका दिया पैन्टी भी सरका दी फिर उसने अपना लंड निकाला और पीछे से ही उसकी चूत में पेल दिया और बोला "मैं ऐसे ही घर

जाऊँगा । तुम बैठी रहना मैं कार चलाऊँगा ।" फिर राजू ने कार बाहर निकाला । काले शीशे होने की वजह से और रात होने की वजह से किसी को कुछ दिखाई नहीं दे रहा था । जब कार पर्किंग–साईट से बाहर निकली तो अचानक मैं सामने आ गया । मुझे देख कर दोनो घबड़ा गये । जल्दबाजी में अलग भी नहीं हो पाये कि मैं कार के गेट के करीब पहुँच गया । नजदीक से मैने जब उनदोनों को इस हालत में देखा तो मेरा भी लंड खड़ा हो गया । दोनों अलग हुये और राजू ने कहा "यार किसी को मत बताना ।" मैंने कहा "ठीक है पहले गाड़ी में बैठने तो दो ।" ये कह कर मैं सीता की बगल में बैठ गया और बोला "चलो ।" जब गाड़ी चल दी तब मैंने सीता को कमर से पकड़ा और गोद में बैठा लिया ।

"ये क्या कर रहे हैं?" मैं किसी से नहीं बोलूँ इसकी कीमत ले रहा हूँ ।" ये कह कर मैं सीता की चूचियों को मसलने लगा । फिर मैं "बोला राजू यार आज मैन तुम्हारी बहन को चोदूँगा, चोदने दोगे नऽ?" राजू बोला "ठीक है ।" तीनों घर आ गये । घर आते ही मैं जल्दी से सीता को लेकर राजू के कमरे में घुस गया और सीता को पूरी नंगी कर के जोरदार चुदाई की । चुदाई के बाद सीता ने ही यह कहानी मुझे बताई । अब मैं गीता को चोदने की तैयारी कर रहा हूँ ।